दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-V (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/18(JS)-HL-**HL5**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Dilkhush

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 5, 21/08/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]: 1 1 3 0 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Dilkhush

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) यूनीकोड और हिंदी

हिंदी भाषा की इंकोडिंग व्यवस्था में यूनीकोड के आगमन ने आमूलचूल परिवर्तन ला दिया। इससे पहले 8 बिट्स वाले कोड से 128 संख्या तक अक्षरों का इंकोडिंग किया जा सकता था लेकिन 16 बिट्स वाले यूनिकोड से लगभग 65536 वर्णों का उपयोग में लाया जा सकता है।

अतः यूनिकोड ने न केवल हिन्दी के व्यवसायिक व तकनीकी लेखन को एक सामूहिक गति प्रदान की है बल्कि भूमंडलीकरण के दौर में इसकी समकक्ष भाषा अंग्रेजी के स्तर पर विकास के दरवाजे खोल दिये हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यूनिकोड के विकास से लेखन सुविधा में आसानी होने के साथ फॉन्टस की समस्या लगभग खत्म होने वाली है, अभी तक के प्रचलित ज्यादातर फॉन्ट में कमियों को सुधार करते हुए, विभिन्न डिजिटल डिवाइसों पर किसी भी फाइल को खोला जा सकता है।

इससे की-बोर्ड के मानकीकरण की समस्या का समाधान तो होगा ही साथ ही अपनी प्रासंगिकता खोने के भ्रमों को भी दूर किया जा सकता है। कुछ कवियों ने यूनिकोड पर कविता भी लिखी - "अब बची है हिंदी यूनिकोड की गोद में !!"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में काशी नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान

काशी नागरी प्रचारिणी सभा बाबू श्यामसुंदर दास, पं. रामनारायण मिश्र आदि के प्रयासों से स्थापित की गई जिसका उद्देश्य हिन्दी के साहित्येतिहास लेखन, हिन्दी के विकास के निरंतर प्रयास तथा लिपि व शब्दावली के विकास के लिए कार्य करना था।

देवनागरी लिपि में शब्दावली की समस्या का लगभग समाधान सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्दसागर' से हो गया जिसको भारत सरकार ने मानकीकरण में शामिल किया।

इसके अलावा सभा द्वारा सुझाये गये सुझावों में अप्रचलित या समानार्थी शब्दों के प्रयोग को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाप्त करना जैसे ऋ, ~~ॠ~~ श, ष, आदि।

अ > अ, ख > ख, भ > भ. आदि वर्णों में दूसरे ~~शब्द~~ वर्णों का प्रयोग करना।

शिरोरेखा लिखने में न रहे, लेकिन टंकण में रहे ~~अक्षर~~ ताकि लिखने में गति प्रदान हो। मात्राओं को व्यंजनों से हटाकर लिखना जैसे काली > क ा ल ी आदि काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रयास एवं जिससे देवनागरी लिपि को मानकता प्रदान हुई।

कामताप्रसाद गुरु व बाद में किशोरीदास वाजपेयी के द्वारा व्याकरण संबंधी प्रयास सभा के तत्वावधान में ही हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिंदी की लिंग-व्यवस्था की समस्याएँ

हिंदी प्रायः संस्कृत के आधारभूत ढाँचे पर विकसित हुई। चूँकि संस्कृत में लिंग के तीन भेद होते हैं - पुल्लिंग, स्त्रीलिंग व नपुंसकलिंग (उभयलिंग) लेकिन सरलीकरण की प्रक्रिया में हिंदी में मात्र दो लिंगों की व्यवस्था ही रखी गई यथा पुल्लिंग व स्त्रीलिंग।

नपुंसकलिंग को सामान्यतः पुल्लिंग में शामिल किया जाता रहा है लेकिन कुछ शब्दों को लेकर अभी भी असामंजस्य बना हुआ है जैसे प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति इत्यादि।

विचारकों व लेखकों के आपसी सहमति से • राष्ट्रपति,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शब्द को पुल्लिंग श्रेणी में मान लिया गया है लेकिन 'प्रधानमंत्री' को लेकर अभी भी समस्या बनी हुई है।

इसके अलावा कुछ देशों के नाम को स्त्रीलिंग मानना जबकि कुछ के नाम को स्त्रीलिंग मानना भी एक समस्या बनी हुई है।

हिन्दी के मानकीकरण का और सरल व सुबोध बनाने के लिए निरंतर अनुसंधानों व अध्ययन की आवश्यकता है ताकि एक सहमति बन सके और अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने में लिंग सम्बन्धी समस्याएँ न हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) हिंदी की विशेषण-व्यवस्था

मानक हिन्दी में विशेषण उन शब्दों को कहते है जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते है अर्थात् इन शब्दों से इनका महत्व स्पष्ट हो जाता है।

विशेषणों के प्रकारों में भाववाचक, संख्यावाचक, सम्बन्धबोधक आदि प्रमुख है। उदाहरण के लिए -
"राम ईमानदार आदमी है।"
ईमानदार 'राम' की विशेषता को बताता है अतः चरित्रमूलक विशेषणों में शामिल किया जा सकता है।

इसी प्रकार संख्यावाचक विशेषणों का प्रयोग भी अधिकांश वाक्यों में किया जाता है जैसे -
उन्नीस लड़कों का समूह, बारह बजे वाली बस, इत्यादि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेषज्ञ व्यवस्था से प्रयोगशीलता को बढ़ी के साथ में हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि के मानकीकरण प्रयासों को आधार मिला है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयास स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हुए, जिनमें फॉन्टस, टाईपराईटर, टंकण व मुद्रण व्यवस्था का विकास शामिल था।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भी बाल गंगाधर तिलक ने 'हिन्दी केसरी' पत्रिका में तिलक फॉन्टस का इस्तेमाल किया जिसमें लगभग 190 प्रकार के फॉन्टस विकसित किए गये।

रेमिंग्टन व ओडवुड नामक कंपनियों के टाईपराईटर ने टंकण व्यवस्था को गति दी लेकिन इसका प्रभाव उतना महत्वपूर्ण नहीं रहा। हिन्दुस्तान मुद्रण लिमिटेड द्वारा विकसित गए टाईपराईटर ने हिन्दी के लेखन कौशल को विकसित किया लेकिन संतोषजनक स्थिति अभी भी नहीं आयी थी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इनस्क्रिप्ट टाइपिंग के आगमन व फोनेटिक आधारित साफ्टवेयर ने हिन्दी के टंकण को व्यवस्थित ढाँचा प्रदान किया जिसका उपयोग भारत सरकार के सभी मानकीय तौर पर किया जाता रहा है।

की-बोर्ड के मानकीकरण की समस्या, डाटा संसाधन व शब्द संसाधनों से संबंधित साफ्टवेयर के विकास की कमी ने टंकण व्यवस्था की गति में बाधा डाली लेकिन अब यूनिकोड के विकास ने इन सब समस्याओं का हल निकाल लिया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी की कारक-व्यवस्था के विकास का क्रम अपभ्रंश व अवहट्ट के काल से शुरू हुआ जिसमें सम्बन्ध के साथ 'का' व अधिकरण 'में' आदि प्रमुख थे।

हिंदी की कारक-व्यवस्था, संस्कृत की कारकीय व्यवस्था के ढाँचे पर विकसित हुई व संख्या भी आठ है लेकिन संस्कृत में प्रचलित विभक्तियों की जगह हिंदी में परसर्गों का प्रयोग किया जाता है।

इसके अलावा कारकीय परसर्गों को संज्ञापदों के साथ हटाकर व सर्वनामिक शब्दों के साथ जोड़कर लिखा जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे राम ने रावण को मारा। तथा उसने, तुमको इत्यादि।

कारक-व्यवस्था का महत्व स्वतंत्र शब्दों को जोड़कर वाक्य निर्माण व वाक्य को अर्थपूर्णता प्रदान करने में दिखता है क्योंकि स्वतंत्र शब्दों से वाक्य विधान अधूरा रहता है।

कारक-व्यवस्था के मानकीकरण में निम्न कारकों को शामिल किया गया है-
कर्ता (ने), कर्म (को), करण (से), संप्रदान (के लिए), अपादान (से वियोगार्थ), सम्बन्ध (का, के, की), अधिकरण (में, पे, पर) तथा सम्बोधन (हे!, ओ, अरे!)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अतः परसर्गों के प्रयोगों की सटीकता पर आधारित कारकीय व्यवस्था ने हिन्दी भाषा के विकास को न केवल समुचित विकास व आधार प्रदान किया बल्कि अर्थग्रहणता की सुगमता व सुस्पष्टता को बढ़ावा मिला।

हालाँकि कुछ वाक्यों में प्रयोग के समय समस्या व असमंजस बना रहता है, लेकिन सरलता व सजगता से अभ्यास करने पर समाधान मिल जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) हिंदी संज्ञाओं के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिये। 15

संज्ञा व्याकरणिक संरचना का आधारतत्व है जिसके आधार पर पद संरचना के अन्य तत्व विकसित होते हैं।

किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव के नाम को संज्ञा कहा जाता है जैसे राम, घोड़ा, ~~सुख~~ सुख आदि।

~~संज्ञा~~ संज्ञा का वर्गीकरण विभिन्न सन्दर्भ के आधार पर किया गया है जिसमें संज्ञा पद का इस्तेमाल किया जाता है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, समूहवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा आदि प्रमुख हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी व्यक्ति के नाम को इंगित करता है जिसके

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आधार पर अन्य अभिकारी पदों जैसे विशेषण, सर्वनाम तथा कारकों का प्रयोग निर्भर करता है।

संज्ञा पदों के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है। जातिवाचक ~~संज्ञा~~ संज्ञा में किसी जाति को व्यक्त किया जाता है जैसे पुरुलव, काला इत्यादि।

समूहवाचक संज्ञा में किसी समूह विशेष को संज्ञा दी जाती है और उस संज्ञापद के नाम से ही वह समूह जाना जाता है। जैसे- विधायिका, नौकरशाह इत्यादि।

भाववाचक संज्ञाओं में व्यक्ति के मनोभाव को प्रकट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किया जाता है तथा उसी के अनुसार संज्ञा पद का प्रयोग किया जाता है।
जैसे → दुःख - सुख, [illegible] आदि

अतः हिन्दी की मानकीकृत व्याकरणिक व्यवस्था में संज्ञापदों का विधान इस प्रकार वैज्ञानिक तरीके से निर्धारित किया गया है कि इनके प्रयोगों में एकरूपता हो व असमंजस पैदा न हो।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी में वैज्ञानिक-लेखन में गुणाकर मुले का अवदान बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी में वैज्ञानिक-लेखन के जनक महाराष्ट्र में जन्मे श्री गुणाकर मुले को माना जाता है, जिनके प्रयासों न सिर्फ हिन्दी में वैज्ञानिक-लेखन का व्यापक आधार प्रदान किया बल्कि हिन्दी में लेखन प्रासंगिकता को जीवित बनाये रखा।

वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली का निर्माण करना गुणाकर मुले जी का प्रथम प्रयास था जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान व तकनीकी अंग्रेजी भाषा की शब्दावली को हिन्दी में अनुवादित किया।

भौतिकी, रसायनशास्त्र आदि से सम्बन्धित सिद्धान्तों, संकल्पनाओं व अवधारणाओं का अनुवाद व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सटीक शब्दों का प्रयोग करके विश्लेषणात्मक व उच्च कोटि के लेखन को दर्शाता है।

इनकी पुस्तकें 'ब्रह्माण्ड की यात्रा', 'सूर्य व नक्षत्र', 'गुरुत्वाकर्षण का नियम,' आदि ने भौतिकी में विद्यार्थियों के ज्ञान को विकसित किया।

इनकी बदौलत है कि एन.सी.ई.आर.टी ने हिंदी भाषा में वैज्ञानिक लेखन की शुरुआत की जिससे ज्ञान-विज्ञान आम विद्यार्थियों की पहुँच में पहुँचा।

इन्हीं के प्रयासों से इनके पूरक गौरीशंकर जी ने वैज्ञानिक लेखन को सशक्त व सुदृढ़ बनाया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुणाकर मुले के प्रयासों से ही शिक्षण व्यवस्था में एक आधारभूत ढाँचे का विकास हुआ।

वर्तमान समय में आवश्यकता है कि ज्यादा से ज्यादा उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी व शिक्षक आम-विज्ञान को हिंदी में लिखें ताकि आम लोग नये-नये तकनीकों व अवधारणाओं के ज्ञान से वंचित न रहे और निचले तबके के लोग भी रहस्यमयी विज्ञान को जान-समझ सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) देवनागरी लिपि की उन विशेषताओं पर प्रकाश डालिये, जिनके कारण यह एक वैज्ञानिक लिपि मानी जा सकती है। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि के दोषों पर प्रकाश डालिये। 20

देवनागरी लिपि ने राष्ट्रीय एकता का परिचय दिया क्योंकि यह लिपि मानकीकृत रूप में वैज्ञानिक लिपि का परिचय देती है।

स्वरों का अलग से क्रम (शुरुआत में व एक व्यंजन पर), ~~स्वरों~~ मात्राओं का व्यंजनों में मिलाकर लिखना तथा एक ध्वनि के एक लिए वर्ण प्रयुक्त होना आदि देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को दर्शाते हैं, लेकिन साथ ही इसमें कुछ दोष भी है जिसके कारण यह भारत की बहुभाषी संस्कृति को बांधने में उतनी सफल नहीं रही जितनी अपेक्षा थी।

देवनागरी लिपि में दोष

मुख्यतः वर्णों से संबंधित, मात्राओं के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रयोग से सम्बन्धित आदि हैं।

वर्णों की अधिकता इस लिपि का एक दोष है जिसकी वजह से लेखक को वर्णों के बारे में सोचना पड़ता है।

अप्रचलित वर्णों / व्यंजनों ~~के~~ जैसे ~~त्र~~ ~~रुक~~ ऋ, ग, क्ष आदि का प्रयोग उसे ~~[illegible]~~ जटिलता प्रदान करते हैं।

कुछ ध्वनियाँ <u>ज्ञ, त्र, ह्र</u> आदि व पंचमवर्ण (ङ, ञ, ण, न, म,) आदि के प्रयोगों में असमंजस की भावना भी एक दोष माना जाता है।

कहाँ अनुस्वार का प्रयोग करना है और कहाँ अनुनासिक का यह स्थिति लेखक की ~~[illegible]~~ प्रयोगशीलता को विकसित होने से रोकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा हलन्त चिह्नों का प्रयोग, व्यंजन संयोग आदि भी एक दोष के रूप में देखे जाते हैं।

समानार्थी ध्वनियों की उपस्थिति श/ष में भेद-अभेद की स्थिति व मात्राओं की स्थिति आदि भी इसकी सीमाओं को प्रदर्शित करती हैं। ख को 'रव' लिखना, ऍ, ऑ के लिए ध्वनियों की कमी जो कि द्रविड़ भाषी परिवार की कन्नड़, तमिल, तेलगु में प्रचलित है इसकी सामाजिक प्रवृत्ति की कमजोरी की ओर इंगित करती है।

लेकिन इन दोषों के बावजूद देवनागरी लिपि राष्ट्रलिपि के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रूप में अपना स्थान कायम बनाये हुए है, निरंतर तकनीकी मशीनों के विकास, सॉफ्टवेयर व एप्लीकेशन्स ने देवनागरी लिपि की व्यापकता को लगातार बढ़ाया ही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिंदी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिंदी की शब्दावली व्यवस्था मानकीकरण के समय व्यवस्थित रूप में दिखलाई पड़ती है। चूँकि ऐतिहासिक विरासत, राजनीतिक व भौगोलिक कारणों से विभिन्न भाषाओं का प्रभाव हिन्दी पर रहा है इसलिए इसमें प्रयुक्त शब्द भी अलग-अलग स्रोतों से आते हैं।

सभी भाषाओं की जननी संस्कृत रही है, और उनके शब्दों को तत्सम शब्द कहा जाता है। स्रोत की दृष्टि से तत्सम शब्दों का भण्डार हिंदी में व्यापकता के साथ उपलब्ध है।

सरलीकरण की प्रक्रिया के दौरान उच्चारण की सरलता व बोधगम्यता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के लिए शब्दकोश तो संस्कृत से लिया गया लेकिन इन शब्दों का तद्भवीकरण कर दिया, अतः दूसरा प्रकार तद्भव शब्द है जो हिन्दी में सबसे अधिक मात्रा में मिलती है।

क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव, विभिन्न बोलियों ब्रज / अवधी, ग्रामीण परिवेश के लेखकों / कवियों ने आंचलिक शब्दों का प्रयोग किया जो देश स्थान-पान, रहन-सहन से संबंधित थे, इन्हें देशज शब्द कहा जाता है जैसे अंगड़ाई, गुल्ली-डंडा, बिछौना इत्यादि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंतरिक शब्द प्रकार में हिंदी भाषा के शब्दों का प्रयोग है जिसमें न केवल अरबी-फारसी बल्कि अंग्रेजी के शब्दों का देवनागरी लिपि में लिया जाता है। इन्हें विदेशज शब्द कहते हैं। डॉक्टर, हॉस्पिटल आदि।

अतः इन सब प्रकारों से मिलकर हिंदी के शब्दकोश व्यापक रूप ग्रहण करता है, जो इसकी राष्ट्रभाषा होने की कसौटी को पूरा करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) कामताप्रसाद गुरु के हिंदी-व्याकरण-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कामताप्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण-लेखन के भीष्म पितामह माने जाते है, इनके ग्रंथ देवनागरी का उद्भव, विकास और समस्याएँ व्याकरण लेखन का महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

कामताप्रसाद गुरु ने नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वाधान में हिन्दी का व्याकरण लिखा जो कि पहला गंभीर प्रयास था।

उनके हिंदी-व्याकरण लेखन की विशेषताओं में हिंदी व उर्दू के शब्दों को शामिल करना, वाच्य व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना, परसर्ग का संज्ञाओं के साथ हटाकर, व सर्वनामों के साथ सटाकर लिखना आदि प्रमुख थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्होंने बेलॉग के द्वारा लिखे गये व्याकरण को आधार बनाकर व्याकरणिक विशेषताओं का निर्माण किया।

इनके व्याकरण में सुधार के लिए किशोरीदास वाजपेयी की अध्यक्षता में समिति बनायी गयी तथा वाजपेयी जी ने अपने लिखित सुझाव को छः लोगों को समर्पित किया जिनमें कामताप्रसाद गुरु भी शामिल थे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) नकेनवाद

नकेनवाद छायावाद के अंतिम दौर में प्रचलित विचारधारा है जिसका प्रतिपादन तीन कवियों ~~के समूह~~ ने किया।

इनका मूल उद्देश्य था कि स्वच्छंदतावादी परंपरा को उसके मूल स्वरूप में लाना तथा कविताओं को केवल मनोरंजनपरक न बनाकर उसमें लोकमंगल की स्थापना करना ताकि कवि समूह सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्य करें और साहित्य का प्रयोजन सिद्ध हो।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) छायावाद के नए अलंकार

छायावाद में प्रकृति का सौन्दर्य, नारी, पशु-पक्षी आदि के साथ प्रेम में रखा गया।

छायावाद में तीन नये अलंकारों का प्रादुर्भाव हुआ जिनमें प्रकृति का मानवीकरण अलंकार, विशेषण-विपर्यय तथा ध्वन्यार्थ-व्यंजना शामिल हैं।

मानवीकरण अलंकार में प्रकृति के सौन्दर्य को मानवीकृत रूप में प्रस्तुत किया गया जिससे प्रकृति की चित्रात्मकता व बिम्बात्मकता को काव्य में प्रदर्शित किया गया।

"मेघमय आसमान से उतर रही
संध्या सुंदर परी सी,
धीरे-धीरे, धीरे।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा विशेषण - विपर्यय अलंकार में उपमेय तथा उपमान को इस तरह से व्यवस्थित किया कि सुंदरता की सच्चाई पाठकों के सामने प्रस्तुत हो।

ध्वन्यार्थ व्यंजना अलंकार में ध्वनियों के तालमेल से प्रकृति के नाद सौंदर्य को दर्शाया गया है जिससे अलंकारों की दुनिया में नये आयाम जुड़े।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'पल्लव' की 'भूमिका' का महत्त्व

'पल्लव' की भूमिका में मैथिलीशरण गुप्त व सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने छायावादी कवियों के बारे में विचार प्रस्तुत किए हैं। जिसमें रचना का उद्देश्य, उसमें निहित भाव आदि को बताया है।

आचार्य शुक्ल ने 'पल्लव' की भूमिका का विरोध किया और छायावाद को समाज से कटा हुआ आंदोलन बताया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अज्ञेय की काव्यानुभूति का स्वरूप

'अज्ञेय' आस्तित्ववादी विचारधारा के रचनाकार फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवादी मानसिकता से प्रभावित थे। उनके द्वारा लिखा गया 'तारसप्तक' में उनकी काव्यानुभूति का स्वरूप दिखाई पड़ता है जिसमें व्यक्ति सामाजिक यथार्थ से हटकर मनोवैज्ञानिक धरातल पर कविताओं की रचना करते हैं।

उनकी कविताओं में 'आंगन के पार द्वार', 'चाँद का मुँह टेढ़ा' आदि में उनकी विचारधारा में टी. एस. इलियट व आई. ए. रिचर्ड्स के 'निर्वैयक्तिकतावाद' के सिद्धान्त का भी मिश्रण हुआ है।

उनकी कविताओं में केवल संवेदना ही नहीं बल्कि शिल्पगत सौंदर्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर भी विशेष ध्यान दिया गया है जिसके माध्यम से उन्होंने काव्य की प्रयोगधर्मिता के उद्देश्य का प्रतिपादन किया।

उनके द्वारा प्रतिपादित 'प्रयोगवाद' व 'नयी कविता' काव्यांदोलनों में यही दिखाया गया है जैसे अन्तर्मन, अजनबीपन आदि की समस्या, यौन चेतना का दमन आदि को कविताओं के माध्यम से दिखाया जाए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

7. (क) क्या छायावाद तद्युगीन राष्ट्रीय चेतना से पलायन का काव्य है? सप्रमाण उत्तर दीजिये। 20

'छायावाद' द्विवेदीयुग में श्रीधर पाठक, माखिनेच आदि के नेतृत्व में चले 'स्वच्छंदतावादी आंदोलन' के प्रभाव में पैदा हुआ, जिसका प्रयोजन व्यक्ति की स्वतंत्रता, मनोभावों की अभिव्यक्ति को केंद्र में लाना था ताकि व्यक्तिवाद को महत्व मिल सके।

इसके कवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला आदि ने काव्य रचना में प्रकृति की सौन्दर्यता, नारी के भावनात्मक प्रेमपूरक सौन्दर्य तथा मानव के सौन्दर्य पर बल तो दिया लेकिन यह कहना उचित नहीं होगा कि यह राष्ट्रीय चेतना से पलायन का काव्य है, क्योंकि निराला की 'राम की शक्ति पूजा' कविता में न केवल नारी स्वाधीनता का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रश्न उठाया है बल्कि राम व रावण के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन की चेतना को भी व्यापक रूप से उठाया है। 'अन्याय जिधर है, उधर है शक्ति' और 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो ग्रहण।' आदि का उद्घोष निराला ने अंग्रेजों के साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने के मनोभाव से कहा है

इसके अलावा जयशंकर प्रसाद ने 'रश्मिरथी' व अन्य कविताओं में न केवल ऐतिहासिक गौरव को प्रकट किया बल्कि उस गौरव से प्रेरणा लेकर वर्तमान में संघर्ष की भावना को पैदा किया।

उन्होंने ~~कामायनी~~ 'कामायनी' में मनु व श्रद्धा के माध्यम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

से न केवल विषमता की स्थिति पर बल दिया, जिसके कारण मानव का विकास रुका हुआ था बल्कि समरसता की स्थिति पैदा करने के साथ-साथ एक नये उत्साह का संचार किया। जिससे लोग राष्ट्रीय-चेतना को अपनी प्राथमिकताओं में रखे।

महादेवी वर्मा ने भावनात्मक, सौन्दर्य काव्य लेखन किया लेकिन ~~इनकी~~ ~~[illegible]~~ इनका उद्देश्य हाशिये पर स्थित लोगों की करुणामयी स्थिति के चित्रांकन करना था। जिससे साम्राज्यवाद का वास्तविक रूप सामने आ सके।

इनके अलावा, इस युग में इन कवियों ने ~~[illegible]~~ -

"हिमाद्रि तुंग शृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की भावना को व्यापक तौर पर फैलाया।

आ० शुक्ल के अनुसार छायावादी युगीन समाज से कटा हुआ, स्वच्छंदतावादी काव्यधारा के विकास में प्रभाव व राष्ट्रीय चेतना से पलायन करने वाला काव्य था लेकिन यदि गहराई से देखें तो पता चलता है कि प्रत्यक्ष तो नहीं लेकिन परोक्ष रूप से, इसमें राष्ट्रीय चेतना समाहित थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी यात्रा-साहित्य के विकास में राहुल-सांकृत्यायन के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राहुल-सांकृत्यायन ने हिंदी के यात्रा-साहित्य को एक नया आयाम दिया। वे यात्रा करने के इतने शौकीन थे कि लगभग बारहमास यात्रा करना पसंद करते थे।

उन्होंने इस विधा को लोगों में नये ऊर्जा के संचार का माध्यम बनाया और यात्रा-वृतान्त लिखने को प्रेरित किया।

उनके द्वारा लिखे ग्रन्थ 'यूरोप की छः मास की यात्रा', 'रूसी यात्रा' आदि में उन्होंने वहाँ के भौगोलिक व सामाजिक वर्णन कर चित्र खींचे बल्कि सांस्कृतिक वर्णनों के माध्यम से पाठक के मन में एक चलचित्र सा बना देते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राहुल सांकृत्यायन ने अमेरिका, यूरोप, रूस आदि की लगभग सभी ~~ ~~ महत्वपूर्ण ~~ ~~ स्थानों की यात्रा की और यात्रा-वृतान्त लिखे।

इन्हीं से प्रेरणा लेकर अन्य साहित्यकारों ने भी यात्रा वृतान्त लिखे। महादेवी वर्मा ने भी यात्रा वृतान्त लिखे लेकिन उनके संस्मरण ज्यादा प्रसिद्ध हुए।

उन्होंने न केवल विदेशी यात्रा बल्कि स्वदेशी यात्रा वृतान्त भी लिखे जिससे लोगों के मन में यात्रा करने की अनुभूति का का विकास हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इनका यात्रा वृत्तान्त में वहाँ के लोगों के विचारों का, भावों का दृश्यात्मक चित्र मिलता है जिससे सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों व मनोभावों का अंदाजा लगाया जा सकता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी की प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्यधाराओं की तुलना कीजिये। 15

उत्तर छायावाद युग में प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्यधाराओं का आगमन हुआ, विचारधारा की भिन्नता के अलावा काव्य के उद्देश्य में विषम रूपता इनमें मिलती है।

प्रगतिवादी लेखक संघ की स्थापना, 1936 ई. में हुई, जिसका मूल उद्देश्य प्रगतिशीलता की भावना रखने वाले कवियों को एक प्लेटफॉर्म देना था जिससे विभिन्न समस्याओं जैसे मजदूर-किसान शोषण, नारी के अधिकारों हनन, सामंतवादी विचारधारा, पूंजीवाद के दुष्प्रभाव, दलित समस्या आदि पर लेखन के माध्यम से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्रांति पैदा करना था। लेकिन बाद में इनका संबंध केवल मार्क्सवादी विचारधारा रखने वाले कवियों से हो गया जिनमें नागार्जुन, मुक्तिबोध आदि प्रमुख थे।

(क) साहित्य का प्रयोजन शोषक वर्ग द्वारा शोषित वर्ग में हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध क्रांति-चेतना को जगाना था।

(ख) साहित्य क्रांति का एक साधन है न कि मनोरंजन का माध्यम

(ग) साहित्य में वस्तु (संवेदना) का महत्व न कि शिल्प का, वस्तु की संरचना में ही शिल्प निहित होता है।

(घ) साहित्य के क्षेत्र में नारी समस्या, दलित समस्या, मजदूर-किसान समस्या आदि को रखा गया, प्रकृति के सभी जीवों पशु-पक्षी को इसमें शामिल किया गया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जबकि प्रयोगवाद, 'अज्ञेय' द्वारा लिखित 'तारसप्ताक' के बाद में आरंभ हुआ जो 'मनोविश्लेषणवादी' विचारधारा के साथ टी.एस. इलियट के 'निर्वैयक्तिकतावाद' के सिद्धान्त को आधार मानता है। इनका मानना था कि कवियों को प्रयोगधर्मी होना चाहिए ताकि काव्य का विकास हो।

शिल्प के महत्व को उतना ही महत्व दिया जितना संवेदना को, क्योंकि शिल्प ही एक कवि को दूसरे कवि से पृथक करती है।

अतः दो भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के प्रभाव में इन काव्यधाराओं का अन्त हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) हिंदी के नवगीत आंदोलन का परिचय देते हुए उसकी विशेषताओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation